# "हमें धनपतियों की नहीं योग्य व्यक्तियों की जरूरत है"

## आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 18 सितम्बर।

अहिंसा यात्रा के प्रणेता एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जंगल में काष्ठ बहुत होता है उस काष्ठ से अच्छी मूर्तियों का निर्माण किया जा सकता है, पर कुशल कारीगरों की कमी है। आज ऐसे कारीगरों की जरूरत है जो काष्ठ की मूर्तियों में प्राण फूंक सके और समाज के हित का प्रसाद बना सके। हम मुंबई में अहिंसा यात्रा के दौरान गये, वहां देखा समाज का हित चाहने वाले कारीगर मौजूद है।

उक्त विचार आचार्य प्रवर ने जैन विश्व भारती में आयोजित श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के प्रगति प्रतिवेदन समर्पण समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य प्रवर ने फाउंडेश के अध्यक्ष रमेश धाकड़ को समाज हित साधने वाला व्यक्ति बताते हुए कहा कि हमें ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो हमारे कार्य में सहभागी अथवा सहयोगी बन सके। हमें धनपतियों की जरूरत नहीं है, स्टार जगत के लोगों की जरूरत नहीं है। हमें ऐसे योग्य व्यक्तियों की फौज चाहिए जो समाज एवं राष्ट्र के हित में चिंतन करते हों। आचार्य महाप्रज्ञ ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि दुनिया में करोड़पति अरबपति बहुत है, पर हमारा उनसे कोई मतलब नहीं है उनसे तो उन लोगों को मतलब है जिनको कुछ चाहिए। हमें तो योग्य व्यक्ति चाहिए जो स्वयं के स्वार्थ से ऊपर उठकर हमारे मानव उत्थान कार्यों में सहभागी बन सके।

आचार्य महाप्रज्ञ ने योग्य व्यक्तियों की कसौटियों का उल्लेख करते हुए कहा कि योग्य व्यक्ति की पहली कसौटी है शासन भक्ति एवं दूसरी कसौटी है गुरुभक्ति। जो अपने स्वार्थ, अपने कर्त्तव्यों को समाज के हित में विलीन कर देता है वह योग्य होता है। कुशल कारीगर होता है। आज ऐसे कुशल कारीगरों के निर्माण की जरूरत है।

इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण ने फाउंडेशन को मोहमयी नगरी में अमोह की चेतना जगाने में सफलता अर्जित करने की मंगलकामना की। फांउडेश के अध्यक्ष रमेश धाकड़, मंत्री बाबूलाल बाफना, कोषाध्यक्ष सम्पत मादरेचा, अनूपचन्द बोथरा ने मंत्री प्रतिवेदन की प्रति आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यवर को समर्पित की। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

## प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

**लाडनूं 18 सितम्बर।**

प्रेक्षा इन्टरनेशनल एवं तुलसी आध्यात्मिक नीडम द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय प्रेक्षाध्यान आवासीय शिविर का समापन हुआ। शिविर संभागियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान आदतों के परिष्कार की विलक्षण पद्धति है। उन्होंने जैन विश्व भारती के रमणीक परिसर, कार्यकर्त्ताओं के द्वारा सुन्दर व्यवस्थाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने वाला शांति के साथ जीना सीख जाता है। उन्होंने ऐसे शिविरों के निरंतर आयोजनों की मांग रखी।

इस प्रेक्षाध्यान शिविर में आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण का सान्निध्य एवं मुनि जयकुमार, मुनि कुमारश्रमण का निर्देशन प्राप्त होने के साथ अनेक मुनियों साध्वियों, समण–समणियों के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

---

## नवरात्रा नवाह्निक अनुष्ठान आज से

**लाडनूं, 18 सितम्बर।**

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित होने वाला नवरात्रा नवाह्निक अनुष्ठाने आज (19 सितम्बर) प्रातः 9.30 बजे से जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में शुभारंभ होगा। इस अनुष्ठान में मंत्र जप के विशिष्ट प्रयोग कराये जायेंगे। युवाचार्य महाश्रमण ने बताया कि इस अनुष्ठान में ब्रह्ममूर्हत के समय प्रातः 9.30 बजे से 10.00 बजे एवं रात्री 8.00 बजे से 9.00 बजे मंत्र के विभिन्न प्रयोग होंगे। इस अनुष्ठान काल में जैन रामायण का वाचन रात्रि 7.30 बजे से 8.00 बजे के दौरान किया जायेगा।